[108/A-40] Seat No: _____ No. of printed pages: 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
B. A. (VI - Semester) Examination
Wednesday, 28th March 2018
2.00 pm - 5.00 pm
UA06CHLT17 : प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य भाग-२

कुल गुण : ७०

नोट : हिन्दी में शिरोरेखा लगाना अपेक्षित है ।

प्र.१ निम्नलिखित में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए । (१५)

(क) तबहिं उपँगसुत आय गए ।
सखा सखा कछु अंतर नाहीं भरि अंक लए ।।
अति सुंदर तन स्याम सरीखो देखत हरि पछिताने ।
ऐसे को वैसी बुधि होती ब्रज पठवैं तब आने ।।
या आगे रस-काव्य प्रकाशे जोग-बचन प्रगटावै ।
सूर ज्ञान दृढ़ याके हिरदय जुवतिन जो सीखावै ।।

(ख) उद्धव! यह मन निश्चय जानो ।
मन क्रम बच मैं तुम्हें पठावह ब्रज को तुरत पलानो ।।
पूरन ब्रह्म, सकल अबिनासी ताके तुम हौ ज्ञाता ।
रेख, न रूप, जाति, कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता ।।
यह मत दै गोपिन कहँ आवहु बिरह नदी में भासति ।
सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति ।।

(ग) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँई परत, स्यामु हरित दुति होइ ।।

(घ) कहत नहत रीझत खिझत, मिलत खिलत, लजियात ।
भरे भौन में करत हैं नैननु ही सब बात ।।

(च) इति आवति चलि जाति उत, चली छ सातक हाथ ।
चढ़ी हिंडौरै सी रहै लगी उसासनु सास ।।

प्र.२ भ्रमरगीत एक उपालंभ काव्य है - समझाइए । (२०)

अथवा

प्र.२ टिप्पणी लिखिए । (२०)

(क) भ्रमर गीत का कथानक (ख) सूरदास का वात्सल्य वर्णन

प्र.३ सतसई परम्परा की चर्चा करते हुए बिहारी सतसई का स्थान निर्धारित कीजिए । (२०)

अथवा

प्र.३ टिप्पणी लिखिए । (२०)

(क) रीतिसिद्ध कवि बिहारी (ख) बिहारी का संयोग श्रृंगार

प्र.४

(क) टिप्पणी लिखिए । (०८)

सूरदास का विरह वर्णन **अथवा** बिहारी का भावपक्ष

(ख) निम्नलिखित में से **किन्हीं सात** प्रश्नों के अतिसंक्षिप्त उत्तर लिखिए । (०७)

(१) अष्ठछाप के चार कवियों के नाम लिखिए ।

(२) वियोग श्रृंगार के उपभेद लिखो ।

(३) सूरदास का जन्म कब माना जाता है ?

(४) पुष्टि का अर्थ क्या है?

(५) भ्रमरगीत सार में कौन सा रस प्रमुख है?

(६) बिहारी सतसई में कितने दोहे हैं?

(७) बिहारी सतसई किस वर्ग की रचना है?

(८) बिहारी ने कौन से छंद में सबसे ज्यादा लिखा है?

(९) बिहारी के गुरू कौन थे ?